केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का कारवार अनुसंधाव केंद्र

डॅ वी. एस. ककाति
प्रभारी अधिकारी, कारवार अनुसंधान केंद्र

आमुख

कर्नाटक राज्य का उत्तर कन्नड जिला लगभग 160 किलोमिटर लंबी है, उत्तर में माजाली से लेकर दक्षिण में सिरुर तक फैला हुआ है। इस तट पर हमें बहुमूल्य मछलियाँ, जैसे तारली, बांगडे क्रस्टेशिया और अनेक प्रकार के शंख प्रशंख मिलते है। इन मछलियों का संशोधन और बचाव कार्य केलिए केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने एक शोध केंद्र कारवार शाखा का संगठन 1948 में किया । तब यह स्थापन बांगडे शोध युनिट के रूप में पहचाना जाता था। तब से यह संगठन संशोधन का कार्य संभालने लगा। फिर 1958 में इस केंद्र ने अपने ही मकान में काम काज शुरू किया और अब तक उसी मकान में शोध कार्य जारी है । 1981 में इस केंद्र को अरण्य विभाग से कर्नाटक में सब से बडा शोध केंद्र का स्थापन करने के इरादे से कोडिबाग ग्राम में एक बडा जमीन भी किराये पर लिया गया। उसी जमीन पर अनेक्स लेबोरेटरी व ह्याचरी के रूप में ताल्कालिक इमारत बनाया गया। सन 1965 में कारवार शोध घटक को सब-स्टेशन का दर्जा दिया गया। सातवीं दशक में शोध केंद्र के नाम से परिवर्तित किया गया।

मुख्य कामकाज और प्रगति

सबसे बडी जिम्मेदारी यह सेंटर को सौंपा गया है कि यह सेंटर वेलापवर्ति मात्स्यिकी संपदाए और तलमज्जी फिनफिश सपदाओं का विवरण देता है। इस तटवती मछुवारों का उत्पन्न इन्हीं मछलियों पर आधारित है। 1960 के बाद ट्रालर बोटों ने समुद्र तल से तलमज्जी मछलियाँ और झीगों का उत्पादन बढाता रहा। इन मछलियों का शोध भी लगातार इस केंद्र से हो रहा है।

यहाँ के कई ज्वारनदमुख और पश्चजल के प्रदेशों में प्रोटीनयुक्त खाद्य प्रदान करने वाले द्विकपाटी अथवा बाइवाल्व संपदा है। काली, शरावती, अघनाशिनी, गंगावली आदि ज्वारनदमुखों में द्विकपाटी संपदा पाई जाती है। और ये ज्वारनदमुख सीपी और झींगा पालन केलिए मशहूर है।

वेलापवर्ती मात्स्यिकी

सन 1998 डाटा के अनुसार कारवार से बांगडे मछलियों का सक्रिय पकड अगस्त में प्रारंभ हुई और सितंबर-अक्तोबर तक पकड उच्च हो गया और दिसंबर में घट गई। विभिन्न केंद्रों में बांगडे मात्स्यिकी के प्रयुक्त संभारों की प्रमुखता के अनुसार पश्चिम तट के उत्तर में पडे कारवार में कोशसंपाश / वलयसंपाश प्रमुख है।

कारवार में मानसूनोत्तर अवधि की उपरी तल मात्स्यिकी स्थिति अच्छी होने पर भी इस केंद्र को ग्रीष्म आनायन में पकड बहुत कम थी। शायद बांगडे अवप्रवाह के समय दक्षिण की ओर बढ गए होंगे।

वेलापवर्ती मछलियों की पकड के लिए परंपरागत यानें जैसे एक ही कांट से बनाई गई बडी व छोटी नावों व यंत्रीकृत नावों का उपयोग होना है। वेलापवर्ती मछलियों को पकडने के लिए मूलतः परंपरागत मत्स्यन गियर जैसै बोट संपाशों, तट संपाशों और अन्य जालों से होता है।

प्रमुख वाणिज्य पख मछलियों का है। बांगडे, तारली अन्य तारलियां (सातवीं दशक में पर्स-सीन का उपयोग करके मछुवारोंने लेस्सर सर्डिन जैसे *एस . डेई, एस. गिबोसा, एस.फिम्ब्रियेटा* ज *और एस. अलबेला* पकडने लगे)

तारली के अलावा दूसरे स्थान पर बांगडा मछली है। इस मछली को शून्य बरस के वय में ही ज्यादा पकडा जाता है। एक बरस का बंगडा 22 सेंटि मिटर से ज़्यादा लंबाई में पा सकता है। आगस्त से अक्टोबर महिनों में ज्यादा तरह बच्चे बंगडे पाये जाते है। मछली संपदा विभिन्न संग्रह से प्राप्त होता है।

पोम्फ्रट मछलियां *पी. अर्जेंटियस, पी.चैनेन्सिस, पी.नैजर* से सूचित किया जाता है। ये मछलियां 270 मिलि मिटर तक एक या दो बरस के होते है।

पानी के तले की मात्स्यिकी संपदाएं सभी यंत्रिकृत नावें पानी के तले का मछलियां पकडते है। उन में से सिल्वर बेल्लिस, बटर फिश लिज़ार्ड फिश, थ्रेडफिन ब्रीम्स, क्याट फिश और सयनिडस अधिक मात्रा में पकडी जाती है।

मोलस्कन मात्स्यिकी संपदाएं

स्क्विड और कटल फिश आदि मछलियां आगस्त से अक्तुबर महिने में किनारे तक आकर अपने अंडे छोडकर जाते है। काली और अघनशिनी नदी में *मेरिट्रिक्स, एम.कास्टा और विलोरिटा सिप्रिनोपिडिस* मिलते है।

ओयस्टर में *क्रेसोस्ट्रिया मद्रासेन्सिस और सी.कुकुलेटा* मौजूद है। केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा संवर्धन संबंधी प्रोद्योगिकी सत्तर के दशक के आरंभ में विकसित करने पर भी कर्नाटक में शंबु कृषि सीमित स्तर पर ही हो रही है । इसके कारण प्रमुखतः उद्यमकर्ताओं की उत्साहहीनता, जानकारी की कमी, कम विपणन

साध्यता और वित्त का अभाव था । पिछले कुछ सालों से केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का कारवार अनुसंधान केंद्र कर्नाटक के उत्तर जिल्ले में शंबु संवर्धन व्यापक करने का प्रयास करते आ रहा है।

एम.एफिनिस, पिनाइड मरग्युएन्सिस, पी. इंडिकस, पी. मोनोडोन और *पारापिनीयोप्सिस स्टैलिफेरा* झींगे बहुत ही मशहूर हैं और सारे बरस में मिलते है। इन झींगों का संपादन ट्रालर बोट से होता है।

वल्कमय जलचर विभाग में पांच परियोजना पर काम जारी है। अब तक केकडे का संवर्धन यशस्वि हो चुका है। झींगे के अंडाशय पर भी अच्छे काम जारी है। झींगों का और केकडे पर संग्रह निर्धारण का काम जारी है।

मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंध

इस विभाग में अब तक पांच परियोजना पर काम हुआ है। कारवार ज्वारनदमुख और समुद्र का तापमान और खारापन पर संशोधन जारी है।

निम्नलिखित सुविधांएं इस केंद्र में उपलब्ध हैं।

(1) समुद्री मछली खेत

(2) आर्द्र प्रयोगशाला और स्फुटनशाला

(3) 7.5 मी ओ ए एल का एक अनुसंधान पोत

(4) वातन करने का कंप्रसर

(5) पुस्तकालय

(6) कंप्यूटर की सुविधाएं ❑